जनवरी-फरवरी 2026 वर्ष : 11 अंक : 3 ISSN : 2348-7577

भिनसार

साहित्य, सिनेमा और समाज की शोध पत्रिका

भिनसार

द्वैमासिक पत्रिका

पीयर रिव्यूड

जनवरी-फरवरी, 2026, वर्ष 11, अंक 3

संरक्षक

प्रो. रमा

प्राचार्या, हंसराज कॉलेज, मल्कागंज, दिल्ली विश्वविद्यालय,
दिल्ली-110007, (dr.rama1965@gmail.com)

संपादक

अंकिता चौहान

उप-संपादक

भावना

प्रबंध-संपादक

साक्षी

संपादकीय कार्यालय

एफ-114, एसएलएफ वेद विहार, गाजियाबाद-201102,
मो. : 9205867927, 9811506290

Email : ankitachauhan55@gmail.com

प्रिंटिंग प्रेस

कृष्णा ऑफसेट

अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली

आवरण चित्र

पूजा श्रीवास्तव (बी.ए. हिंदी)
डॉ. बी.आर. अम्बेडकर विश्वविद्यालय दिल्ली

टाइपिंग एण्ड सेटिंग

प्रदीप कुमार
पटेल चेस्ट, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली-110007

मूल्य 100/-

प्रकाशनः

अक्षर पब्लिशर्स, दूरभाष : 9711255121

पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण संबंधित लेखक के हैं।
उनसे संपादक अथवा प्रकाशक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

स्वामी, प्रकाशक साक्षी द्वारा एम-46, डीआईजेड एरिया, सेक्टर-4, बंगला साहिब रोड, दिल्ली से प्रकाशित
संपर्क - 9711255121 : Email : bhinsar2014@gmail.com

ISSN : 2348-7577

इस अंक में...

संपादकीय 4

- ब्रिटिश सत्ता की आरम्भिक पत्रकारिता नीति और हिन्दी पत्र 'उदन्त मार्तण्ड' *- डॉ. बिपिन प्रसाद* 5-9
- जयशंकर प्रसाद के नाटकों में गीतों का महत्व *- डॉ. विजय यादव* 10-12
- भगत सिंह का राष्ट्रवाद *- मिथिलेश कुमार* 13-16
- भारतीय ज्ञान परंपरा और समाज *- नेहा* 17-22
- गुरुदत्त की औपन्यासिक दृष्टि में राष्ट्रवाद की संकल्पना *- डॉ. सतेन्द्र कुमार शुक्ल, आदर्श उपाध्याय* 23-32
- हिंदी उपन्यासों का रंगमंचीय स्वरूप *- रंजीत कुमार यादव* 33-36
- जनजातीय जीवन की जटिलता *- डॉ. आनंद गुलाबराव खरात* 37-43
- संत सुंदरदास का हिंदी साहित्य के विकास में योगदान *- डॉ. भावना मल्होत्रा* *44-47*
- विद्यार्थी जीवन में अष्टांग योग की भूमिका : एक वर्णनात्मक अध्ययन *- अरविन्द कुमार शुक्ला* *48-52*
- अनुवाद : मनन एवं मंथन *- डॉ. रवि कुमार गोंड़* *53-57*
- हानूश : आपातकालीन परिस्थितियों का प्रतिबिम्ब *- डॉ. अनुरुद्ध सिंह* *58-62*
- नई कहानी के दौर में भीष्म साहनी की कहानियों की वैचारिक निरंतरता *- डॉ. अरविंद तिवारी* *63-67*
- तकनीकी युग में बाल साहित्य का स्वरूप *- मनोज कुमार* *68-73*
- प्रेमचंद की कहानियों में अभिव्यक्त बाल मनोविज्ञान *- शिव नारायण सिंह* *74-79*
- समकालीन स्त्री-कविता में चित्रित आदिवासी जीवन संघर्ष *- अनुज कुमार* *80-85*
- तिल भर जगह नहीं : अपने समय का जीवंत दस्तावेज *- डॉ. चंद्रकला सिंह* *86-90*
- विधवा जीवन का प्रश्न और वाटर फिल्म *- डॉ. वंदना यादव* *91-98*
- निर्मल वर्मा की कहानियों में अकेलापन एवं विस्थापन *- प्रो. महेन्द्र सिंह, निकिता* *99-101*
- हिन्दी दलित आत्मकथाओं में लोकतत्त्वों की महत्ता *- अनुराधा* *102-104*
- हिन्दी साहित्य में स्त्री-विमर्श और वेश्या जीवन का सामाजिक यथार्थ *- प्रवीणा श्रीवास्तव* *105-108*
- मीराबाई की भक्ति भावना *- डॉ. रविन्द्र कुमार* *109-113*
- मैत्रेयी पुष्पा की कहानियों में स्त्री-विमर्श *- डॉ. अनिता कुमारी ठाकुर* *114-118*
- नीरू अम्मा *- प्रवीणा श्रीवास्तव* *119-121*

ISSN : 2348-7577

प्रेमचंद की कहानियों में अभिव्यक्त बाल मनोविज्ञान

शिव नारायण सिंह

शोध-सार

प्रेमचंद साहित्य को सामाजिक परिवर्तन का साधन मानते हैं और लोरी गाकर सुलाने वाले साहित्य की भर्त्सना करते हैं। प्रेमचंद अपने वयस्क साहित्य के माध्यम से समाज में व्याप्त विसंगतियों व रूढ़ियों पर चोट करते हैं तो अपने बाल साहित्य व बाल मनोवैज्ञानिक कहानियों से प्रेमचंद बच्चों में साहस, धैर्य, सत्यनिष्ठता, सहृदयता व बंधुत्व जैसे मूल्यों का बीजारोपण करते हैं। प्रेमचंद बाल मनोविज्ञान के इतने पारखी हैं कि वयस्कों के लिए लिखी गई कहानी जब बच्चे पढ़ते हैं तो कभी ईदगाह के मेले में खो जाते हैं तो कभी गुल्ली-डंडा के मैदान में, किंतु साथ ही साथ उन्हें दादी की चूल्हे में जलती उंगलियों की याद भी बनी रहती है। जब यही मनोवैज्ञानिक कहानियां वयस्क पढ़ते हैं तो यह कहानी उन्हें भेद देती है मन की गहराइयों तक झकझोर देती है उनकी व्यक्तिगत व सामाजिक चेतना को और फिर उड़ेल देती हैं धीरे से उन आदर्श मानवीय मूल्यों को जहां से होकर गुजरती है प्रसन्नता, आत्मशांति व आत्मतुष्टि की राह।

बीज शब्द

मूल्य, बालमन, नैतिकता, बाल मनोविज्ञान, संस्कार, जाति, धर्म।

मूल आलेख

प्रेमचंद साहित्य को स्वांतः सुखाय न मानकर सामाजिक परिवर्तन का एक साधन मानते हैं। प्रेमचंद ने अपने साहित्य के माध्यम से समाज की अनेक कुरीतियों व रूढ़ियों पर चोट भी पहुंचाई है। प्रेमचंद जब साहित्य की दुनिया में पदार्पण करते हैं तब भारत कुप्रथाओं व रूढ़ियों से ग्रस्त था। उन दुश्चक्रों से भारत की जनता को निकालना प्रेमचंद के लिए अत्यंत चुनौतीपूर्ण कार्य था। प्रेमचंद ने इस चुनौती को स्वीकार किया और अपनी कहानियों व उपन्यासों के माध्यम से उन्होंने धर्म, जाति, मजहब आदि के नाम पर विभाजित लोगों को आपस में जोड़ने के लिए अपने कथा साहित्य के माध्यम से अनेक प्रयास किए और बहुत हद तक वह प्रयास सफल भी हुए। इसके साथ ही यह दौर भारत की पराधीनता का दौर भी था और प्रेमचंद ने अपनी पहली कहानी 'दुनिया का सबसे अनमोल रतन' में ही इस पराधीनता की बेड़ी पर चोट किया और कहा कि "खून का वह आख़िरी कतरा जो वतन के हिफाज़त में गिरे दुनिया की सबसे अनमोल चीज है।"[1] किंतु थोड़े ही समय बाद प्रेमचंद महसूस करते हैं कि भारत की गुलामी सिर्फ़ राजनीतिक गुलामी नहीं है बल्कि यह गुलामी कई स्तरों की है जातिवाद, छुआछूत जैसी मानसिक गुलामी भारत को कभी आगे नहीं बढ़ने देगी और प्रेमचंद इसके विरुद्ध बहुत सी कहानियां भी लिखते हैं किंतु इसके साथ ही साथ प्रेमचंद यह भी महसूस करते हैं कि जब शिशु जन्म लेता है तो वह कुम्हार की मिट्टी की तरह होता है उसे जिस रूप में समाज ढालता है वह ढलता चला जाता है। अगर बच्चों को बचपन में जाति, मज़हब, धार्मिक अंधविश्वास आदि से मुक्त करने वाले साहित्य को पढ़ाया जाए तो यह मानसिक गुलामी अपने आप अगली पीढ़ी तक हस्तांतरित न हो करके खत्म हो जाएगी। इस तथ्य को केंद्रित करते हुए प्रेमचंद ने बाल साहित्य का सृजन किया और अपनी कहानियों में भी बाल मनोविज्ञान का सुंदर प्रयोग किया। प्रेमचंद बच्चों के मन को बहुत गहरे स्तर पर समझते थे यही कारण है कि उनकी बाल मनोविज्ञान से जुड़ी कहानियां हमारे समक्ष दोहरे पाठ उपस्थित करती हैं। जैसे 'दो बैलों की कथा'

जैसी कहानी जब बच्चे पढ़ते हैं तो वह कहानी उनके मन में बाल कहानियों जैसा प्रभाव छोड़ती है किंतु जब एक वयस्क पाठक इस कहानी को पढ़ता है तो वह उसे देश की आज़ादी के प्रसंग से जोड़कर देख पाता है। यही खूबसूरती ईदगाह, गुल्ली डंडा, बड़े भाई साहब जैसी अनेक कालजयी कहानियों में दिखाई देती है। यही कारण है कि प्रेमचंद जितने लोकप्रिय वयस्कों के बीच हैं उससे कहीं अधिक लोकप्रिय बच्चों के मध्य हैं।

प्रेमचंद के पुत्र श्रीपत राय ने 1948 ई. में 'जंगल की कहानियां' शीर्षक से प्रेमचंद द्वारा लिखित 12 बाल कहानियों का संग्रह सरस्वती प्रेस से प्रकाशित करवाया। इस पुस्तक में जो बाल कहानियां थी वह इस प्रकार हैं - शेर और लड़का, वनमानुष की दर्दनाक कहानी, दक्षिण अफ्रीका में शेर का शिकार, गुब्बारे पर चीता, पागल हाथी, सांप की मणि, वनमानुष का खानसामा, मिट्ठू, पालतू भालू, बाघ की खाल, मगर का शिकार, जुड़वा भाई। प्रेमचंद की इन बाल कहानियों का उद्देश्य बच्चों में साहस, स्वतंत्र विचार, आत्मरक्षा की भावना, नैतिकता, सहृदयता, उदारता, बंधुत्व, देशभक्ति जैसे मूल्यों को आरोपित करना रहा है। प्रेमचंद ने 1930 ई. में हंस पत्रिका की संपादकीय में 'बच्चों को स्वाधीन बनाओ' लेख में लिखा- ''बालक को प्रधानता ऐसी शिक्षा देनी चाहिए कि वह जीवन में अपनी रक्षा आप कर सके बालकों में इतना विवेक होना चाहिए कि वह हर एक काम के गुण दोष को भीतर से देखें।''[2] इस पूरे लेख में प्रेमचंद का मूल उद्देश्य यही प्रकट करना था कि अभिभावकों के तानाशाही रवैया से बच्चे बिगड़ जाते हैं और बच्चे वह सीख नहीं पाते हैं जो अभिभावक सिखाना चाहते हैं इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए उन्होंने 'जंगल की कहानियां' लिखी। जिसमें मनोरंजन के साथ-साथ आदर्श मूल्यों की स्थापना सहज ही बालमन में की जा सके।

इसके अतिरिक्त प्रेमचंद ने 'कुत्ते की कहानी' नाम से एक लंबी कहानी भी लिखी जिसके वृहद आकार को देखते हुए इसे बाल उपन्यास की संज्ञा भी दी जाती है। प्रेमचंद ने इस बाल उपन्यास की रचना अपने जीवन के आखिरी वर्ष 1936 ई. में की थी। इसकी भूमिका में प्रेमचंद ने बच्चों से संवाद शैली में लिखा है कि प्यारे बच्चों तुम जिस संसार में रहते हो वहां कुत्ते-बिल्ली ही नहीं पेड़-पत्ते और ईट-पत्थर तक बोलते हैं, बिल्कुल उसी तरह जैसे तुम बोलते हो और तुम उन सब की बातें सुनते हो और बड़े ध्यान से कान लगाकर सुनते हो, इन बातों में तुम्हें कितना आनंद आता है।

इसी समय प्रेमचंद ने 'राम चर्चा' नाम की एक पुस्तक का सृजन भी किया। यह पुस्तक भी बच्चों के लिए लिखी गई थी। इस पुस्तक के माध्यम से प्रेमचंद ने रामायण को अत्यंत सरल भाषा में बच्चों के समक्ष प्रस्तुत किया। श्रीराम के ईश्वरीय रूप को उन्होंने इस पुस्तक में मानवीय रूप में प्रस्तुत किया है जिससे बच्चे राम कथा से साधारणीकरण महसूस करते हुए श्रीराम के मानवता, दया, प्रेम और करुणा के आदर्श को सहज ही आत्मसात कर सकें।

प्रेमचंद अपनी बाल कहानियों में सामाजिक मूल्यों को विशेष रूप से तरजीह देते हैं। प्रेमचंद का मानना है कि मूल्य और संस्कारों का बीजवपन बालमन में ही किया जा सकता है क्योंकि जिन संस्कारों के बीज बालमन में आरोपित किए जाते हैं उन्हीं संस्कारों और मूल्यों के वृक्ष वयस्क मन में विकसित नजर आते हैं। प्रेमचंद ने अपनी बाल कहानियों में बाल मनोविज्ञान के ऐसे सूक्ष्म से सूक्ष्म चित्र खींचे हैं कि वैसा सूक्ष्म चित्रांकन करना किसी मनोवैज्ञानिक के लिए भी कठिन होता। 'जंगल की कहानियां' संग्रह में प्रेमचंद ने जानवर और मानव दोनों को पात्र के रूप में कहानी में रखा है। इन कहानियों में प्रेमचंद केवल बालकों के मनोविज्ञान को नहीं बल्कि जानवरों के मनोविज्ञान को भी उसी निपुणता के साथ प्रस्तुत करते हैं।

प्रेमचंद की इन बाल कथाओं के अतिरिक्त ऐसी अनेक कहानियां भी हैं जो वयस्कों के लिए लिखी गई हैं किंतु बच्चों के मन में ये कहानियां भी वही आदर्श और मूल्य स्थापित करने में भी सक्षम हैं जिसकी कोशिश प्रेमचंद अपनी बाल

कथाओं में करते नजर आते हैं। इस श्रेणी में कजाकी, बड़े भाई साहब, चोरी, पंच परमेश्वर, दो बैलों की कथा, ईदगाह, गुल्ली-डंडा, रामलीला, सच्चाई का उपहार, बूढ़ी काकी, नमक का दरोगा जैसी कहानियां विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

प्रेमचंद साहित्य के उद्देश्य को परिभाषित करते हुए सभापति के पद से प्रगतिशील लेखक संघ के प्रथम अधिवेशन में यह उद्‌बोधन देते हैं- ''जब तक साहित्य का काम केवल मन बहलाव का सामान जुटाना, केवल लोरियां गा-गाकर सुलाना, केवल आँसू बहाकर जी हल्का करना था, तब तक उसके लिए कर्म की आवश्यकता न थी। वह एक दीवाना था, जिसका गम दूसरे खाते थे। मगर हम साहित्य को केवल मनोरंजन और विलासिता की वस्तु नहीं समझते। हमारे कसौटी पर वही साहित्य खरा उतरेगा जिसमें उच्च चिन्तन हो, स्वाधीनता का भाव हो, सौन्दर्य का सार हो, सृजन की आत्मा हो, जीवन की सचाइयों का प्रकाश हो- जो हममें गति, संघर्ष और बेचैनी पैदा करे, सुलाये नहीं क्योंकि अब और ज्यादा सोना मृत्यु का लक्षण है।''[3]

प्रेमचंद की बाल मनोविज्ञान की कहानियों में भी साहित्य का यह उद्देश्य दृष्टिगोचर होता है। यद्यपि ये कहानियां बाल मनोविज्ञान को केंद्रित करके लिखी गई हैं, किंतु प्रेमचंद साहित्य को सुलाने की सामग्री के सख़्त खिलाफ़ हैं चाहे वह बाल साहित्य ही क्यों न हो। प्रेमचंद का मानना है कि बच्चों को शिक्षा खेल-खेल में ही दी जाए तभी वह उसे आत्मसात करते हैं थोपी गई शिक्षा को बच्चे नकार देते हैं। प्रेमचंद बाल साहित्य में भी जादू-टोने व आश्चर्यजनक जादुई घटनाओं के खिलाफ़ हैं। उनका मानना है कि बाल साहित्य भी आदर्श व मूल्य पर आधारित होना चाहिए। जिसे पढ़ने के बाद बच्चों के सोचने के तरीके व उनकी चेतना में गुणात्मक अंतर आ सके। यही कारण है कि ये कहानियां बालमन व वयस्क मन दोनों को एक साथ साधने व तुष्ट करने में सक्षम हो पाती हैं।

बाल मनोविज्ञान की दृष्टि से प्रेमचंद की कहानी 'बड़े भाई साहब' अत्यंत महत्वपूर्ण कहानी है। इस कहानी के माध्यम से प्रेमचंद ने यह दिखाया है की इच्छाओं को लगातार दबाते रहने से मन में कुंठाएं उत्पन्न हो जाती हैं और इससे बच्चों में सृजनात्मक क्षमताएं खत्म होने लगती हैं। बच्चों के लिए आदर्श स्थापित करना बेहतर जरूर है किंतु अति आदर्श व यांत्रिक दिनचर्या बच्चों के मन में प्रतिकूल प्रभाव छोड़ती है। खेलकूद व खिलंदड़पन भी बालमन की एक स्वाभाविक अभिव्यक्ति है और इससे लगातार दूर रहना बच्चों के सर्वांगीण विकास में बाधक सिद्ध होता है। 'बड़े भाई साहब' घर से दूर छात्रावास में रह रहे नौ साल व चौदह साल के दो बालकों की कहानी है। जिसमें चौदह साल का बड़ा भाई अपने आपको छोटे भाई का अभिभावक समझता है और उसके समक्ष आदर्श स्थापित करने के लिए अपनी दिनचर्या से खेलकूद, हंसी-मजाक व सहजता को पूरी तरह से हटा देता है। हर समय छोटे भाई के लिए आदर्श स्थापित करने की होड़ में बड़ा भाई एक किताबी कीड़ा बन जाता है जिससे उसका जीवन बहुत ही नीरस व यांत्रिक हो जाता है। वहीं छोटा भाई खेलकूद में अत्यंत रुचि लेता है साथ ही पढ़ाई पर भी थोड़ी रुचि रखता है जो कि स्वाभाविक बालमन के अनुरूप प्रतिक्रिया है। इसी कारण छोटे भाई के मन में कोई कुंठा या ग्रंथि नहीं निर्मित होती है और वह जीवन को सहज तरीके से जीता है। बड़ा भाई अपनी कक्षा में फेल हो जाता है जबकि छोटा भाई अपनी कक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त करता है। इस स्थिति में छोटे भाई के मन में उत्पन्न होने वाले बाल मनोविज्ञान का प्रेमचंद ने बहुत सुंदर चित्रण किया है - ''मेरे और भाई साहब के बीच में अब केवल एक दरजे का अन्तर और रह गया। मेरे मन में एक कुटिल भावना उदय हुई कि कहीं भाई साहब एक साल और फेल हो जायें, तो मैं उनके बराबर हो जाऊं, फिर वह किस आधार पर मेरी फजीहत कर सकेंगे, लेकिन मैंने इस कमीने विचार को दिल से बलपूर्वक निकाल डाला। आखिर वह मुझे मेरे हित के विचार से ही तो डांटते हैं। मुझे इस वक्त अप्रिय लगता है अवश्य, मगर यह

शायद उनके उपदेशों का ही असर हो कि मैं दनादन पास हो जाता हूं और इतने अच्छे नम्बरों से।"4 'बड़े भाई साहब' कहानी के माध्यम से प्रेमचंद जहां बच्चों को यह सीख देते हैं कि केवल किताबी कीड़ा बनने से ही जीवन में उन्नति नहीं होती है वहीं यह भी सीख देते हैं कि चौदह वर्ष की छोटी उम्र का बड़ा भाई भी कैसे अपने छोटे भाई के लिए एक आदर्श स्थापित करने के लिए अपने जीवन से भोग-विलास व आमोद-प्रमोद को पूरी तरह से काट देता है। बड़े भाई साहब सामाजिक कर्तव्यों के बोध को जीवित रखे हुए हैं। असफल होने पर भी बड़ा भाई अपने अभिभावक के कर्तव्य बोध से विमुख नहीं होता है और उसी निष्ठा के साथ अपने छोटे भाई को मार्गदर्शन देने का कार्य करता है। छोटा भाई निरंतर सफल होने के पश्चात भी अपने बड़े भाई को अभिभावक की दृष्टि से ही देखता है।

प्रेमचंद की बाल कहानियों में भारत की साझी संस्कृति भी अपने मुखर रूप में परिलक्षित होती है। इस दृष्टि से 'ईदगाह' कहानी विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। प्रेमचंद का संपूर्ण साहित्य मुक्तिकामी चेतना का साहित्य है और उनकी बाल कहानियां भी इससे अछूती नहीं है। यह मुक्ति जाति, धर्म व संप्रदाय के बंधनों की मुक्ति भी है। प्रेमचंद यदि अपनी कहानियों में होली, दीवाली और दशहरे जैसे हिंदू त्योहारों का बालमन के झरोखे से वर्णन करते हैं तो 'ईदगाह' कहानी में ईद जैसे महत्वपूर्ण मुस्लिम त्योहार को आधार बनाकर मुस्लिम जीवन का बाल दृष्टि से सुंदर चित्र प्रस्तुत करते हैं। ईदगाह कहानी के माध्यम से प्रेमचंद ने यह दिखाया है की गरीबी व अभाव का जीवन कैसे उम्र से पहले ही बच्चों में बड़ों जैसी समझदारी पैदा कर उनका बचपन छीन लेता है। पांच साल का बालक हामिद जिसे स्वाभाविक बाल मनोवृत्ति के अनुसार मिठाई के लिए ज़िद करनी चाहिए गरीबी व अभावपूर्ण जीवन ने उसे इतना परिपक्व बना दिया है कि वह मिठाई से होने वाले नुकसान गिना रहा है- "मिठाई कौन बड़ी नेमत है। किताब में इसकी कितनी बुराइयां लिखी हैं।"5 प्रेमचंद ने इस कहानी में बाल मनोविज्ञान का जितना बारीक चित्रण किया है वैसा चित्रण अन्यत्र मिलना अत्यंत दुष्कर है। बच्चे अभाव पूर्ण स्थिति के चलते ऊपर से चाहे खिलौनों के प्रति उदासीनता ज़ाहिर करते रहें किंतु अंदर से कैसे उनका बाल मन खिलौने के प्रति लालायित रहता है इसका सुंदर दृश्य प्रेमचंद की इसी कहानी में देखने को मिलता है- "हामिद खिलौने की निन्दा करता है-मिट्टी ही के तो हैं, गिरे तो चकनाचूर हो जायें लेकिन ललचायी हुई आंखों से खिलौनों को देख रहा है और चाहता है कि जरा देर के लिए उन्हें हाथ में ले सकता। उसके हाथ अनायास ही लपकते हैं; लेकिन लड़के इतने त्यागी नहीं होते, विशेषकर जब अभी नया शौक है। हामिद ललचाता रह जाता है।"6 इसके साथ ही प्रेमचंद ने 'ईदगाह' कहानी के माध्यम से बच्चों की निश्छलता, सहृदयता व कोमलता जैसे मूल्यों का भी प्रकटीकरण किया है। यह दृश्य तब उपस्थित होता है जब हामिद मेले से अपने लिए कोई वस्तु न खरीद कर चिमटा खरीद लाता है और अपराधी भाव से अपनी दादी से कहता है- "तुम्हारी उंगलियां तवे से जल जाती थीं इसीलिए मैंने इसे ले लिया।"7

बाल्यावस्था में सभी बच्चे अपनत्व व प्रेम की भावना से परिपूर्ण होते हैं। ऊंच-नीच छुआ-छूत जैसी भावनाओं से दूर-दूर तक उनका कोई नाता नहीं होता है किंतु बड़े होने पर यह सभी भाव मनुष्य में घर करने लगते हैं। पद व प्रतिष्ठा प्राप्त करने पर मनुष्य बाल्यावस्था की सहजता खोकर अहंकार से भर उठता है। पद व प्रतिष्ठा से प्रभावित होकर बचपन के मित्र भी कैसे सामान्य बातचीत करने में भी असहजता महसूस करते हैं।इसी मनोविज्ञान को प्रेमचंद की कहानी गुल्ली- डंडा में बड़ी बारीकी के साथ प्रस्तुत किया गया है- "मैं अब अफसर हूं। यह अफसरी मेरे और उसके बीच में दीवार बन गयी है। अब मैं उसका लिहाज पा सकता हूं, अदब पा सकता हूं, साहचर्य नहीं पा सकता। लड़कपन था, तब मैं उसका समकक्ष था। हममें कोई भेद न था। यह पद

पाकर अब मैं केवल उसकी दया के योग्य हूं। वह मुझे अपना जोड़ नहीं समझता। वह बड़ा हो गया है, मैं छोटा हो गया हूं।''[8] प्रेमचंद गुल्ली-डंडा कहानी के माध्यम से जहां एक ओर यह बताते हैं कि बचपन कितना निश्छल व भेदभाव रहित होता है। और कहानी में लिखते हैं- ''वह उत्साह, वह लगन, वह खिलाड़ियों के जमघटे, वह पदना और पदाना; वह लड़ाई-झगड़े, वह सरल स्वभाव, जिसमें छूत-अछूत, अमीर-गरीब का बिलकुल भेद न रहता था, जिसमें अमीराना चोचलों की, प्रदर्शन की, अभिमान की गुंजाइश ही न थी।''[9] वही प्रेमचंद इसी कहानी में यह भी स्पष्ट करते हैं की छुआछूत व जातिवाद का बीज बचपन में ही कब बालमन में अंकुरित हो जाता है इसे बच्चे खुद नहीं जान पाते- ''मैं थानेदार का लड़का एक नीच जात के लौंडे के हाथों पिट गया, यह मुझे उस समय भी अपमानजनक मालूम हुआ।''[10]

प्रेमचंद की कहानी 'दो बैलों की कथा' मूलतः पशु-प्रेम और आज़ादी के संघर्ष का दस्तावेज है, किंतु इसमें बाल मनोविज्ञान का एक अत्यंत सूक्ष्म चित्रण भी मिलता है। यह प्रसंग तब आता है जब हीरा और मोती को गया अपने घर ले जाता है और उन पर अत्याचार करता है। वहां भैरो की एक छोटी बेटी है, जो रात को चुपके से आकर उन्हें रोटियाँ खिलाती है। ''उस वक़्त छोटी-सी लड़की दो रोटियाँ लिए निकली, और दोनों के मुँह में देकर चली गई। उस एक रोटी से इनकी भूख तो क्या शांत होती; पर दोनों के हृदय को मानो भोजन मिल गया।''[11] बाल मनोविज्ञान की दृष्टि से यह घटना यह दर्शाती है कि बच्चे 'समान अनुभूति' के स्तर पर बड़ों से कहीं अधिक संवेदनशील होते हैं। उस बच्ची की माँ मर चुकी थी और सौतेली माँ उसे मारती थी। अपने घर में उपेक्षित और प्रताड़ित होने के कारण, वह बैलों की वेदना को अपनी ही पीड़ा के रूप में देखती है। ''लड़की भैरो की थी। सौतेली मां उसे मारती थी, इसलिए इन बैलों से उसे एक प्रकार की आत्मीयता हो गई थी।''[12]

मुंशी प्रेमचंद की कहानी 'चोरी' बाल मनोविज्ञान के एक बेहद संवेदनशील व विचारणीय पक्ष को उजागर करती हैदृवह है 'संगत का असर' और 'नैतिक मूल्यों का निर्माण'। मनोविज्ञान कहता है कि बच्चे का मन कच्ची मिट्टी के सम्मान होता है, जिसे जैसा सांचा मिलता है, वह वैसा ही ढल जाता है। इस कहानी में लेखक ने यह प्रदर्शित किया है कि कोई भी बच्चा जन्म से चोर अथवा अपराधी नहीं होता, बल्कि उसके आसपास का वातावरण और उसके मित्र उसे ऐसा बना देते हैं। कहानी का एक संदर्भ दृष्टव्य है- ''मेरी सिट्टी-पिट्टी भूल गई, बदन का लहू सूख गया। वही हुआ, जिसका मुझे शक हो रहा था। पैर मन-मन भर के हो गए। घर की ओर एक-एक क़दम चलना मुश्किल हो गया।''[13]

मुंशी प्रेमचंद की कहानी ''कज़ाकी' केवल एक गरीब डाकिए की व्यथा की कथा नहीं है, बल्कि यह बाल मनोविज्ञान का एक प्रामाणिक दस्तावेज़ है। इस कहानी के माध्यम से प्रेमचंद ने यह दर्शाया है कि बच्चों की दुनिया बड़ों के बनाए सामाजिक नियमों, ऊंच-नीच तथा आर्थिक भेदभाव से पूरी तरह मुक्त होती है। ''बालकों का हृदय कितना कोमल होता है, इसका अनुमान दूसरा नहीं कर सकता। उनमें अपने भावों को व्यक्त करने के लिए शब्द नहीं होते। उन्हें यह भी ज्ञात नहीं होता कि कौन-सी बात उन्हें विकल कर रही है, कौन-सा कांटा उनके हृदय में खटक रहा है, क्यों बार-बार उन्हें रोना आता है, क्यों वे मन मारे बैठे रहते हैं।''[14] कहानी का बाल नायक अपने पिता से अधिक अपनत्व अपने घर के नौकर 'कज़ाकी' से महसूस करता है। बड़ों की नज़र में कज़ाकी एक साधारण, गरीब और निम्न वर्ग का व्यक्ति हो सकता है, लेकिन बच्चे के लिए वह किसी नायक से कम नहीं है। मनोविज्ञान की दृष्टि से बच्चे पद या प्रतिष्ठा से नहीं, बल्कि रोमांच और स्नेह से प्रभावित होते हैं। कज़ाकी का लठैत होना, दौड़ना और हिरण का बच्चा ले आनादृये सब बच्चे के मन में विस्मय और रोमांच भरते हैं, जो उसे पिता के रूखे अनुशासन में नहीं प्राप्त होता। कहानी का यह संदर्भ इस दृष्टि से दृष्टव्य है- ''हर्षातिरेक में मैं भी दौड़ पड़ता और

ISSN : 2348-7577

एक क्षण में कजाकी का कंधा मेरा सिंहासन बन जाता। वह स्थान मेरी अभिलाषाओं का स्वर्ग था। स्वर्ग के निवासियों को भी शायद वह आंदोलित आनंद न मिलता होगा जो मुझे कज़ाकी के विशाल कंधों पर मिलता था''[15]

बाल मनोविज्ञान की दृष्टि से प्रेमचंद की कहानी 'सच्चाई का उपहार' एक अत्यंत महत्वपूर्ण कहानी है। सबसे महत्वपूर्ण मनोवैज्ञानिक मोड़ कहानी के अंत में आता है। जब अपराधी छात्र दंड के डर से स्कूल नहीं आते, जो 'पलायनवादी मानसिकता' है। लेकिन जब बाजबहादुर उन्हें विश्वास दिलाता है कि उसने शिक्षकों से शिकायत नहीं की, तो उनका 'हृदय परिवर्तन' होता है। यहाँ प्रेमचंद ने प्रमाणित किया है कि शारीरिक दंड से व्यवहार नहीं बदला, बल्कि बाजबहादुर की 'क्षमा' और 'नैतिक श्रेष्ठता' ने उन्हें ग्लानि से भर दिया। यह मनोविज्ञान की भाषा में 'सकारात्मक पुनर्बलन' का उदाहरण है, जहाँ प्रेम तथा विश्वास ने वह कर दिखाया जो छड़ी नहीं कर सकी। कहानी के अंत कि ये पंक्तियां इस तथ्य को प्रमाणित भी करती हैं- ''सब-के-सब उससे गले मिले। इसकी चर्चा सारे मदरसे में फैल गई। सारा मदरसा बाजबहादुर की पूजा करने लगा। वह अपने मदरसे का मुखिया, नेता और सिर मौर बन गया।''[16]

समग्रतः प्रेमचंद की बाल मनोवैज्ञानिक कहानियां केवल बच्चों के लिए नहीं लिखी गई हैं बल्कि उसके दोहरे पाठ उपस्थित होते हैं जहां एक ओर ये कहानियां बालमन के झरोखे से समाज को देखने की दृष्टि प्रदान करती हैं तो वहीं दूसरी ओर समाज में व्याप्त विसंगतियों व विषमताओं पर चोट भी करती चलती हैं। यही कारण है कि ये बाल मनोवैज्ञानिक कहानियां जितनी रोचक बच्चों को प्रतीत होती हैं उतनी ही प्रासंगिक व महत्वपूर्ण वयस्कों को भी प्रतीत होती हैं।

संदर्भ-

1. प्रेमचंद, प्रेमचंद की संपूर्ण कहानियां, मानसरोवर भाग-1, मनोज पब्लिकेशंस, दिल्ली, तृतीय संस्करण : 2007, पृ. 465
2. प्रेमचंद, प्रेमचंद की तेरह बाल कहानियां, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली, संस्करण : 2006, भूमिका से
3. प्रेमचंद प्रतिनिधि संकलन, नेशनल बुक ट्रस्ट, दिल्ली, पहला संस्करण : 2002, पृ. 15
4. प्रेमचंद, प्रेमचंद की संपूर्ण कहानियां, मानसरोवर भाग-1, मनोज पब्लिकेशंस, दिल्ली, तृतीय संस्करण : 2007, पृ. 556
5. वही, पृ. 705
6. वही, पृ. 704
7. वही, पृ. 709
8. वही, पृ. 227
9. वही, पृ. 222
10. वही, पृ. 223
11. प्रेमचंद, नया मानसरोवर, खंड- 7, सस्ता साहित्य मंडल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करणः 2017, पृ.177
12. वही, पृ. 177
13. प्रेमचंद, नया मानसरोवर, खंड- 4, सस्ता साहित्य मंडल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करणः 2017, पृ.315
14. प्रेमचंद की संपूर्ण कहानियां, मानसरोवर भाग-1, मनोज पब्लिकेशंस, दिल्ली, तृतीय संस्करण : 2007, पृ. 680
15. वही, पृ. 675
16. प्रेमचंद, नया मानसरोवर, खंड- 2, सस्ता साहित्य मंडल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करणः 2017, पृ.397

असिस्टेंट प्रोफ़ेसर, हिंदी

डी.बी.एस. कॉलेज, कानपुर,

उत्तर प्रदेश-208006

Email : shivjisingh098@gmail.com

मो.- 9140574648